Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

1. डायस्पोरा से सम्बंधित पत्रिकाओं में भारतीय संस्कृति का विश्लेषणात्मक अध्ययन

मू.जसीम अहमद
शोध छात्र, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल यूनिवर्सिटी, जौनपुर
डॉ. चन्दन सिंह
सहायक प्रोफेसर, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल यूनिवर्सिटी, जौनपुर

शोध सार

भारतीय डायस्पोरिक समाज के उत्थान में भारतीय पत्रकारिता की महत्वपूर्ण भूमिका रही है साथ ही भारतीय मीडिया ने मूल स्थान की संस्कृति से गंतव्य स्थान पर अपनी संस्कृति को फैलाने और जागरूक करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्रवासी भारतीय अपनी संस्कृति को भारतीय मीडिया के द्वारा महसूस करते हैं और हर ख़बर के प्रति संवेदनशील रहते हैं। वर्तमान में शिक्षा और रोजगार के लिए भारत से दूसरे देशों में प्रवासन हो रहा है। मानव समूहों के विस्थापन, प्रवासन और पुनवर्सन के रेखांकन के लिए 'डायस्पोरा' शब्द का प्रयोग किया गया। देश से प्रवासित हुए भारतीयों के लिए देश में घट रही उनके समाज, क्षेत्र और संस्कृति से जुड़ी तमाम घटनाओं से रू-ब-रू कराने का मुख्य माध्यम मीडिया ही रहा है। इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य डायस्पोरा से सम्बंधित गर्भनाल ई पत्रिका में भारतीय संस्कृति का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है इस शोध में गर्भनाल ई-पत्रिका में प्रवासी भारतीय सांस्कृतिक तत्वों को समझने के लिए अंतर्वस्तु विश्लेषण प्रविधि का उपयोग किया गया है। विश्लेषणात्मक अध्ययन करने के पश्चात यह पाया गया कि गर्भनाल ई-पत्रिका भारतीय प्रवासियों के लिए एक माध्यम का कार्य कर रही है इसने अपनी संस्कृति को फैलाने और जागरूक करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

प्रमुख शब्द- भारतीय डायस्पोरा, गर्भनाल ई-पत्रिका, संस्कृति, हिंदी जगत

प्रस्तावना

भारतीय डायस्पोरिक समाज के उत्थान में भारतीय पत्रकारिता की महत्वपूर्ण भूमिका रही है साथ ही भारतीय मीडिया ने मूल स्थान की संस्कृति से गंतव्य स्थान पर अपनी संस्कृति को फैलाने और जागरूक करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्रवासी भारतीय अपनी संस्कृति को भारतीय मीडिया के द्वारा महसूस करते हैं और हर ख़बर के प्रति संवेदनशील रहते हैं। दुनिया के लगभग 130 देशों में भारतीय बसे हुए हैं। 19वीं सदी में अनुबंधित श्रमिक के तहत भारतीयों को दूसरे देशों में ले जाया गया।

Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

वर्तमान में शिक्षा और रोजगार के लिए भारत से दूसरे देशों में प्रवासन हो रहा है। वर्तमान में मानवजाति के पलायन, विस्थापन, पुनवर्सन और पुनर्निर्माण की यात्रा निर्बाध रूप से शताब्दियों से चली आ रही है। बेहतर जीवन जीने, रोजगार प्राप्त करने, आर्थिक स्थिति को मजबूत करने की उम्मीदों के चलते पूरी दुनिया में देश की सीमा से बाहर और सीमा के अंतर्गत प्रावसन हुआ है तथा हो रहा है। भारत में धर्म के प्रचार-प्रसार, व्यापार, मजदूर बंधुआ प्रणाली, शिक्षा आदि के लिए भारतीय देश के बाहर प्रवासित हुए हैं। देश से प्रवासित हुए भारतीयों के लिए देश में घट रही उनके समाज, क्षेत्र और संस्कृति से जुड़ी तमाम घटनाओं से रू-ब-रू कराने का मुख्य माध्यम मीडिया ही रहा है। वर्तमान में मीडिया के विभिन्न माध्यमों से प्रकाशित समाचारों से भी यही प्रतीत होता है। जिसमें भारतीय डायस्पोरा के समाचारों को स्थान मिल रहा है।

भारत के विभिन्न भागों से प्रवासित होकर विभिन्न देशों में बसे भारतीयों के लिए आपसी संबंध बनाए रखना और अपनी सांस्कृतिक विरासत को सहेज कर रखना एक बड़ी चुनौती थी। चूँकि वे सभी वहां मजदूरों के रूप में पहुंचे थे तो उन के साथ अमानवीय व्यवहार आम बात थी। इसी शोषण के विरुद्ध संघर्ष के लिए जब प्रवासी भारतीयों ने संगठित होकर आंदोलन करने की योजना बनाई, तो उन सभी के मध्य मिश्रित हिंदी भाषा जो उनकी मूल भाषा थी जिससे वह लोग एक दूसरे के संपर्क में आ सके। जिसके बाद संगठित होकर औपनिवेशिक सत्ता के खिलाफ आवाज़ उठाने एवं स्वयं को स्थापित करने के लिए उन्होंने पत्रकारिता का महत्व समझा और वहाँ से भारतीय डायस्पोरिक पत्रकारिता की शुरुआत हुई। 19वीं शताब्दी में संचार-क्रांति से पत्रकारिता का विस्तार हुआ। बढ़ती हुई साक्षरता और निरंतर जारी आधुनिकिकरण के तहत मीडिया और भारतीय डायस्पोरा में संपर्क लगातार बना रहा, बल्कि मीडिया ने इस फासले को कम किया है। अधिकांशतः प्रवासी अपने संस्कार व भाषा से भावनात्मक रूप से जुड़े हुए हैं। इन्होंने समय-समय पर हिंदी पत्रकारिता के उन्नयन के लिये अनेक पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारम्भ किया और उसमें उत्तरोत्तर वृद्धि हुई। न्यूजीलैंड से भारत दर्शन, कनाडा से सरस्वती पत्र, हेल्म- यू.के. से हिंदी नेस्ट, क्षितिज, सयुक्त अरब अमीरात से अभिव्यक्ति, अनुभूति, अमेंरीका से अन्यथा, हिंदी परिचय पत्रिका, पलायन, यू.एस.ए. से त्रैमासिक पत्रिका कर्मभूमि, हिंदी जगत, हिंदी बाल जगत, एवं विज्ञान प्रकाश, विश्व हिंदी न्यास समिति द्वारा प्रकाशित पत्रिकाएँ है ई-विश्वा, अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति-सेलम की त्रैमासिक हिंदी पत्रिका-प्रवासी टुडे, अक्षरम नामक अंतर्राष्ट्रीय साहित्यक-सांस्कृतिक संस्था की पत्रिका पुरवाई आदि कई पत्र- पत्रिकाएं वर्षों से प्रकाशित हो रही हैं। दुनिया के विभिन्न जगहों पर पहुंचे उन सभी भारतीयों के लिए प्रिंट मीडिया ने विशेष योगदान दिया है।

Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

गर्भनाल ई-पत्रिका- भारतीय संस्कृति अनेकता में एकता के सूत्र-वाक्य में यकीन रखती है यहाँ रहन-सहन, खान-पान, बोल-चाल और जीवन-शैली की बहुयामी विविधता दिखाई देती है। यही विविधता भारत को पूरी दुनिया में अनुपम बनाती है। दुनियाभर के 130 देशों में भारतीय मूल के करीब तीन करोड़ लोग निवास कर रहे हैं। एक अनुमान के मुताबिक यू. एस. ए. में करीब 32 लाख, खाड़ी देशों में 30 लाख, यू. के. में 16 लाख, दक्षिण अफ्रीका में 13 लाख, कनाडा में 12 लाख, आस्ट्रेलिया में 4 लाख और सूरीनाम, फिजी, मॉरीशस, त्रिनिदाद, न्यूज़ीलैंड आदि देशो में रह रहे हैं। लाखों भारतीय भावनात्मक तौर पर भारत और भारतीयता से प्रेम करते हैं। इसी गर्भनाल ई-पत्रिका में प्रदर्शित प्रवासी भारतीय संस्कृति का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रेम और अपनेपन को बनाए रखने के लिए गर्भनाल नामक पत्रिका का प्रकाशन नवम्बर 2006 में किया गया। गर्भनाल अप्रवासी भारतीयों की मासिक ई-पत्रिका है। इसका पहला अंक " मेंरा गाँव मेंरा देश " था। यह पत्रिका विगत 11 वर्षों से प्रवासी भारतीयों के लिये प्रकाशित की जाती है। पत्रिका दुनियाभर में बसे 50 हजार भारतवंशियों को उनके ई-मेंल पतों पर निःशुल्क भिजवाई जा रही है। अपनी ज़मीन से दूर रहने वाले प्रवासी भारतीयों की आवाज को रखने के लिए संदर्भित पत्रिका एक मंच प्रदान करने का प्रयास कर रही है पत्रिका में विभिन्न देशों की डायरी का कॉलम भी प्रकाशित किया जाता है जिसके तहत नीदरलैंड की डायरी, पिट्सवर्ग की डायरी, सिंगापुर की डायरी, चीन की डायरी आदि प्रमुख हैं।

यह ई-पत्रिका भारतीय संस्कृति और सभ्यता के प्रचार-प्रसार में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है इस ई-पत्रिका में शुषमा शर्मा जी ने भारतीयता की पहचान को प्रसारित करने के लिए कई माध्यमों का प्रयोग किया जैसे धर्म, भाषा, शिक्षा, खेल, व्यापार, मनोरंजन, खान-पान आदि के माध्यम से उनको भारत की संस्कृति का याद दिलाते रहे हैं। इसके माध्यम से ही वह आज भी अपनी संस्कृति और सभ्यता से जुड़े हुएहैं।

गर्भनाल ई-पत्रिका के माध्यम से भारतीय परंपरा और संस्कृति को समझने की कोशिश की गई है और यह बताया गया है कि किस प्रकार शुषमा जी अपने पत्रिका के माध्यम से भारतीयता को प्रदर्शित कर रही हैं और अपने बहु-सांस्कृतिक देश भारत की इस विशिष्टता को प्रवासी भारतीयों तक कैसे प्रेषित कर रहीं हैं और उन्हें अपनी संस्कृति से अवगत कराने का कार्य किस बखूबी के साथ कर रही हैं। इन सबके बारे में इस ई- पत्रिका में विस्तृत तौर पर वर्णित किया गया है। इस प्रकार हम देखते हैं कि यह पत्रिका भारतीय प्रवासियों के लिए कितनी महत्वपूर्ण सिद्ध हो रही है।

प्रस्तुत शोध से सम्बंधित कुछ महत्वपूर्ण अध्ययनों को यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है जैसे- **हुसैन, चरमके .(2003)** ***Diaspora, Memory, and Ethnic Media.*** में लेखक ने पूर्व की संस्कृति और वर्तमान संस्कृति दोनों के अंतर संबधों पर विशेष रूप से केन्द्रित करने की कोशिश की है। है। **लक्ष्मी, एन. तिरुमाला (2013).** के अनुसार सालों से भारतीय सिनेमा 60 भारतीय संस्कृति को फ़ैलाने का माध्यम रहा है। इसमें प्रवासित समुदाय की द्वितीय पीढ़ी को अपनी मातृभूमि से जोड़ने के साधन के रूप में भारतीय सिनेमा का उल्लेख किया है। **M, K. Gautam. (2013 *.Indian diasporic identity.*** के अनुसार भारतीयों को दुनिया के कई हिस्सों में पलायन का एक लंबा इतिहास है। सोलहवीं शताब्दी के मध्य के दौरान पंजाब, राजस्थान, गुजरात और दिल्ली, इलाहाबाद और बंबई के शहरों में पलायन हुआ मध्य एशिया और रूस के लिए"Multanis", "Shikarpuris" और "बनिया" के रूप में लोगो को भेजा जाता था। यह एक "इंडियन मर्चेंट डायस्पोरा" थे। **बर्गर (1993) चक्रवर्ती (1998)** के अनुसार भारतीय अपनी पहचान को खोते जा रहे और विदेशी पहचान को अपनाते जा रहे हैं। लेकिन बड़े विद्वानों और मीडिया हस्तियों द्वारा आज भी विदेशो में भारतीय संस्कृति का मान सम्मान बचा हुआ है **जोर्जिया (2013).** के आलेख से पता चलता है की सूचना के डिजीटल युग में डायस्पोरिक समाज का प्रतिनिधित्व का अध्ययन किया गया है। साथ में यह भी बताया गया है कि मीडिया के विस्तार ने सांस्कृतिक आदान-प्रदान के कई द्वार खोले - हैं। जिससे लोग एक दूसरे को बेहतर तरीके से समझ रहे हैं और अपनी संस्कृतियों का विस्तार भी कर रहे हैं। **मुखर्जी (2015)** ने यह स्पष्ट किया है कि संस्कृति की वाहक तथा पहचान की संरक्षक के रूप में भारतीय प्रवासी समूह की महिलाओं की यात्रा भारतीय समाज के पैतृक स्वरूप और यात्रा के दौरान की परिस्थितियों की वजह से आसन नहीं थी। इन्होने यह भी बताया है कि करारबद्ध तथा विशेषकर महिला समूह ने कभी भी अपने अतीत, अपनी संस्कृति,अपनी भाषा व अपने धर्म से संबंध विच्छेद नहीं किया। मीडिया के इस परम्परागत साधन का प्रयोग कर महिलाओं ने भारत से दूर रहते हुए भी विषम परिस्थितियों में भी भारतीयता के संस्कारों को जीवित रखा। **जोशी, राय.चंद्रायन एवं खत्री (2014)** ने भारतीय डायस्पोरा की अपनी मूल सांस्कृतिक परंपरा और मूल्यों से ज्यादा लगाव और उसके संरक्षण की प्रवृति पर अपने विचार प्रस्तुत किये है।

चतुर्वेदी.(2005) ने भारतीय संस्कृति को पूर्व और वर्तमान में किस तरह से निरुपित किया जा रहा है उसका विस्तृत उल्लेख इस पुस्तक में किया गया है। संस्कृति का परिचय तथा संस्कृति की पहचान पर मुख्य रूप से प्रकाश डाला गया है। **दुबे, अभय एवं कुमार (2014)** ने बताया है कि किस तरह से भारतीय डायस्पोरा को विभिन्न देशों में बसने के लिए किन-किन समास्याओं का सामना पड़ता है। उन्होंने अपनी पहचान स्वरूप में भारतीय संस्कृति को कैसे सुरक्षित और संवर्धन किया

Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

है। **यादव, अवधेश. कुमार (2013)** ***भारत में जनसंचार एवं पत्रकारिता.***ने अपने पुस्तक में वर्तमान समाज में अखबारों की भूमिका और उसकी सामग्री के अध्ययन के विभिन्न महत्वों को यह रेखांकित करती हैं **दयाल एवं मनोज (2010)** ***मीडिया शोध.*** ने बताया कि अंतर्वस्तु विश्लेषण की शुरुआत विश्व युद्ध के समय रेडियो के सामग्री को लेकर एवं सैनिक के व्यवहार को लेकर शोध कार्य शुरू हुआ था। इस समय से अंतर्वस्तु विश्लेषण को एक नया आयाम मिला था ।उसके बाद धीरे धीरे अंतर्वस्तु विश्लेषण की लोकप्रियता बढ़ने लगी। यह सिर्फ रेडियो तक ही सीमित नहीं रहा ,उसके साथ साथ सभी मीडिया में अंतर्वस्तु विश्लेषण का विकास होने लगा था। **राजगढ़िया एवं विष्णु (2013)** ने अपनी पुस्तक **जनसंचार सिद्धांत और अनुप्रयोग.** में बताया है कि जनमाध्यमों की अंतर्वस्तु का विश्लेषण करना संचारविशेषज्ञों की लिए काफी महत्वपूर्ण हैं मीडिया की अंतर्वस्तु मुख्यतया प्रभुत्वसंपन्न वर्ग के विचारों एवं प्रभुत्व को ही स्थापित करती हैं। **सुषमा एवं शर्मा (2015) ने गर्भनाल ई पत्रिका** में प्रस्तुत अपने लेख में यह बताया है कि भारत विविध संस्कृति सभ्यता वाला देश है इसकी यह विशेषता पूरे विश्व में जानी जाती है। यह अपनी किसी भी विशेषता से लोगों का मन आकर्षित करते हैं और जहाँ पर जाते हैं वहां पर अपनी एक अलग पहचान बनाते हैं। **गोयल (2014)** ने गर्भनाल ई पत्रिका में प्रकाशित लेख में त्रिनिदाद में बसे भारतीयों के बारे में बताया है। उन्होंने बताया कि दुःख की स्थिति में भारतीय भजन के माध्यम से अपने दुःख को कम करने का प्रयास करते थे

शोध की प्रासंगिकता:

प्रस्तुत शोध विषय “डायस्पोरा से सम्बंधित पत्रिकाओं में भारतीय संस्कृति का विश्लेषणात्मक अध्ययन: गर्भनाल ई-पत्रिका के संदर्भ में” शोध की दृष्टि से भारतीय प्रवासियों में हिंदी भाषा की स्थिति, भारतीय संस्कृति, विदेशों में रहकर भी भारत के प्रति प्रवासियों का झुकाव, भाषा के नाम पर अपनापन, हिंदी में लिखने वाले प्रवासी लेखक आदि को समझने में यह शोध प्रासंगिक होगा।

शोध उद्देश्य:

गर्भनाल ई-पत्रिका में प्रकाशित लेखों में सांस्कृतिक तत्वों का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि :

उपरोक्त शोध को पूर्ण करने के लिए मात्रात्मक एवं गुणात्मक दो प्रविधियों का उपयोग किया गया है। शोध कार्य में तथ्य संकलन के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक आकड़ों का उपयोग भी किया गया है। इस शोध में गर्भनाल ई-पत्रिका में प्रवासी भारतीय सांस्कृतिक तत्वों को समझने के लिए अंतर्वस्तु विश्लेषण प्रविधि का उपयोग किया गया है। पत्रिका में संस्कृति के पांच बिंदुओं जैसे धर्म, सामाजिक मूल्य, भाषा, फिल्म और शिक्षा को आधार बनाकर प्रकाशित लेखों का विश्लेषण किया

The Asian Thinker

Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

गया है। इस शोध में लिए गए सांस्कृतिक तत्वों के लेखों में से विश्लेषण के लिए उद्देश्यपूर्ण लेखों का निदर्शन पद्धति का उपयोग कर तीन-तीन लेखों का चयन किया गया है। इस शोध पद्धति के माध्यम से पत्रिका में छिपे गुण रहस्यों और लेखक के मनोदशा और पाठक के अनुभव को अंतर्वस्तु विश्लेषण प्रविधि के माध्यम से जानने का प्रयास किया गया है।

शोध क्षेत्र एवं सीमाएँ :

प्रस्तावित शोध विषय को सही समय से मूर्त रूप देने के लिए भोपाल से प्रकाशित गर्भनाल ई-पत्रिका का चयन किया गया है। शोध विषय 'गर्भनाल ई-पत्रिका में प्रदर्शित प्रवासी भारतीय संस्कृति का विश्लेषणात्मक अध्ययन होने के कारण गर्भनाल पत्रिका में प्रकाशित सांस्कृतिक तत्वों से जुड़े लेखों का विश्लेषण किया गया है। गर्भनाल मासिक ई-पत्रिका है। विश्लेषण के लिए गर्भनाल पत्रिका का चयन जुलाई 2016 से जून 2017 तक के कुल 12 अंकों का चयन शोध हेतु शामिल किया गया है। पत्रिका में संस्कृति के पाँच बिंदुओं जैसे धर्म, सामाजिक मूल्य, भाषा, फिल्म और शिक्षा को आधार बनाकर प्रकाशित लेखों का विश्लेषण किया गया है। पत्रिका में प्रवासी भारतीय से संबंधित एक वर्ष के कुल 12 अंक में 52 प्रतिक्रिया प्रकाशित हुई हैं जिनमें से उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति के माध्यम से चयन कर 15 प्रवासी भारतीय प्रतिक्रिया को विश्लेषण का आधार बनाया गया है। शोध को सही समय से पूर्ण करने के लिए जुलाई 2016 से जून 2017 तक प्रकाशित12 अंकों में उपर्युक्त दिए गए बिंदुओं के आधार पर विश्लेषण किया गया है।

गर्भनाल ई-पत्रिका में प्रकाशित सांस्कृतिक लेखों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण :

गर्भनाल (ई-पत्रिका) के विश्लेषण के लिए जुलाई 2016 से जून 2017 तक कुल 12 माह के अंकों का चयन शोध हेतु किया गया है। गर्भनाल पत्रिका मासिक पत्रिका है। 12 माह में पत्रिका में औसतन प्रत्येक महीने 23 से 25 लेख प्रकाशित हुए हैं। सितंबर 2016 में सबसे जयादा 32 लेख प्रकाशित हुए हैं वहीं सबसे कम लेख अक्टूबर, नवंबर और फरवरी में 23 लेख प्रकाशित हुए हैं। गर्भनाल पत्रिका के 12 माह में कुल 315 लेख प्रकाशित हुए हैं। 315 लेखों में से प्रवासी भारतीय संस्कृति के तत्वों से संबंधित कुल 219 लेख प्रकाशित हुए हैं। प्रवासी भारतीय संस्कृति के तत्वों से संबंधित लेखों के चयन के लिए पांच आधार क्रमश: धर्म, भाषा, सामाजिक मूल्य, फिल्म और शिक्षा से जुड़े विषयों को शोध हेतु आधार बनाया गया है। इन्हीं विषयों से संबंधित लेखों का विश्लेषण किया गया है।

क्र. सं.	पत्रिका प्रकाशन का माह/वर्ष	प्रवासी भारतीय संस्कृति के तत्व					कुल तत्वों का योग	कुल लेखों का योग
		धर्म	भाषा	सामाजिक मूल्य	फिल्म	शिक्षा		
1.	जुलाई-2016	05	02	13	00	01	21	28
2.	अगस्त-2016	03	05	14	00	01	23	26
3.	सितंबर-2016	02	05	05	01	03	16	32
4.	अक्टूबर-2016	01	08	04	02	02	17	23
5.	नवंबर-2016	02	07	04	00	01	14	23
6.	दिसंबर-2016	01	02	01	10	00	14	27
7.	जनवरी-2017	01	04	12	02	00	19	30
8.	फरवरी-2017	00	03	06	03	00	12	23
9.	मार्च-2017	02	05	04	00	01	12	31
10.	अप्रैल-2017	02	06	15	00	00	23	24
11.	मई-2017	00	01	04	20	00	25	25
12.	जून-2017	02	02	19	00	00	23	31
	कुल योग	**21**	**50**	**101**	**38**	**09**	**219**	**315**

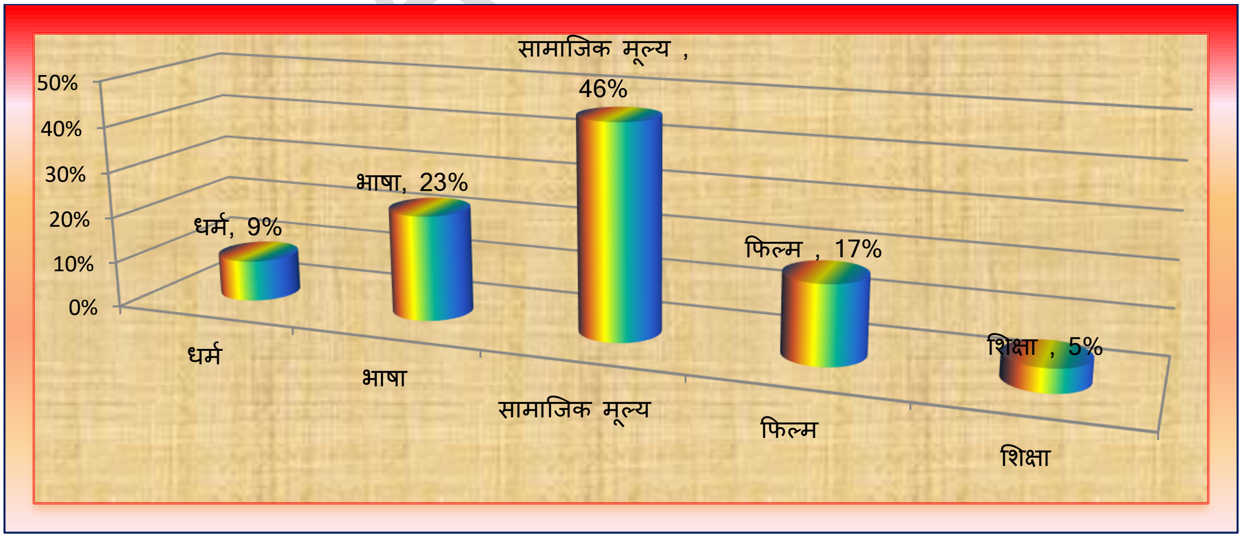

प्राप्त आंकड़ों के अनुसार लेखों को पत्रिका में स्थान दिया 101 माह में सबसे ज्यादा सामाजिक मूल्यों से संबंधित 12 लेखों को सबसे कम स्थान दिया गया है। आंकड़ो पर गौर करें तो यह पता चलता है कि 09 गया है वहीं शिक्षा से संबंधित प्रवासी भारतीय संस्कृति से जुड़े तत्वों के अनुसार समाजिक मूल्य से संबंधित विषयों को पत्रिका में ज्यादा स्थान और महत्व दिया गया है वहीं शिक्षा जैसे महत्वपूर्ण विषयों से संबंधित लेखों को कम स्थान दिया गया है। आंकड़े दर्शाते हैं कि गर्भनाल पत्रिका शिक्षा से संबंधित लेखों के प्रति उदासीन है जो समाज के हित में नहीं है।

शोध विश्लेषण हेतु बनाए गए आधारों में से गर्भनाल पत्रिका में जहां सामाजिक मूल्यों को सबसे ज्यादा स्थान दिया 05 315 माह में प्रकाशित कुल 12 गया वहीं शिक्षा को स्थान कम दिया है। अन्य बिन्दुओं पर गौर करें तोलेखों में से भाषा से संबंधित लेखों को पत्रिका में स्थान दिया गया है। पत्रिका में 21 लेख और धर्म से संबंधित 38 फिल्म से संबंधित ,लेख 50 फिल्म ,भाषा को दूसरा स्थान ,सामाजिक मूल्य को प्रथम स्थान पर :प्रकाशित लेखों को महत्व के आधार पर देखें तो क्रमश कोतीसरा स्थानधर्म को चौथा स्थान और शिक्षा से संबंधित विषयों को पांचवें स्थान पर लेखों के माध्यम से प्रकाशित किया , गया है।

माह प्रकाशित पत्रिका में शोध के लिए चयन किए गए बिन्दुओं के आधार पर मई माह में फिल्म से संबंधित सबसे 12 लेख 20 ज्यादाप्रकाशित किए गए हैं वहीं जून में सामाजिक मूल्यों से संबंधित 08 अक्टूबर में भाषा से संबंधित ,लेख 19 लेख प्रकाशित हुए हैं। 03 लेख और सितंबर में शिक्षा से संबंधित 05 जूलाई में धर्म से संबंधित ,लेख

,जनवरी ,माह प्रकाशित पत्रिका में शोध के लिए चयन किए गए बिन्दुओं के आधार सबसे कम शिक्षा पर दिसंबर 12 माह के 12 मई और जून में शिक्षा से संबंधित कोई भी लेख प्रकाशित नहीं किया गया है।शोध के लिए चयनित ,अप्रैल ,फरवरी माह शिक्षा से संबंधित एक भी 06 अंक में सेलेख पत्रिका में नहीं दिया गया है। आंकड़ो पर गौर करें तो यह कहा जा सकता है कि पत्रिका में शिक्षा से संबंधित लेखों को स्थान नहीं दिया गया है। फिल्म विषय से संबंधित लेखों को जुलाई ,नवंबर ,अगस्त , माह तक एक लेख को भी स् 05 माह में से 12 कुल ,मार्च और अप्रैलथान नहीं दिया गया है। इससे यह पता चलता है कि पत्रिका फिल्म संबंधि विषयों के प्रति भी उदासीन है। 46 माह के आंकड़ो को प्रतिशत में देखें तो पत्रिका में सबसे ज्यादा 12 प्रतिशत और शिक्षा से सं 9 धर्म ,प्रतिशत 17 फिल्म ,प्रतिशत 23 भाषा ,प्रतिशत सामाजिक मूल्यबंधित लेखों को 05 माह के सफर में पत्रिका में भाषा और सामाजिक मूल्यों से 12 प्रतिशत स्थान दिया गया है। कहा जाए तो गलत नहीं होगा कि फिल्म और शिक्षा से संबंधित लेखों को न के बराबर स्थान ,संबंधित लेखों को ज्यादा महत्व और स्थान दिया गया वहीं धर्म दियागया है।

Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

गर्भनाल ई-पत्रिका के संबंधित प्रतिक्रिया का विश्लेषण:

गर्भनाल पत्रिका में प्रत्येक माह पाठक की प्रतिक्रया के कॉलम को भी प्रकाशित किया जाता है। शोध के लिए तय की गई सीमाओं के अनुसार कुल एक वर्ष के गर्भनाल पत्रिका में विदेश में रह रहे प्रवासीभारतीय के प्रतिक्रिया को स्थान दिया 52 विदेश में रहने वाले भारतीय प्रवासी 15 विदेशी प्रतिक्रियाओं में से 52 गया है। गर्भनाल पत्रिका में एक वर्ष में प्रकाशित कुल की प्रतिक्रिया का चयन उद्देश्यपरक सैंपल के माध्यम से किया गया है।

प्रतिक्रिया में मुख्य रूप से स्वास्थभारतीय संस्कृति आदि जैसे विषयों ,फिल्म ,भाषा ,समाज ,मीडिया ,विज्ञान -ज्ञान , से संबंधित लेखों को बहुत ज्यादा पसंद किया गया है। प्रकाशित लेखों में ज्यादातर विषय इन्हीं बिन्दुओं को ध्यान में रखकर लिखा गया है। कुछ प्रवासियों ने पत्रिका मे प्रकाशित लेखों को सराहते हुए गर्भनाल पत्रिका की पूरी टीम को बधाई दी और कहा कि पत्रिका के माध्यम से विदेशों में रहते हुए भी अपने आप को भारत से अलग महसूस नहीं करता हूँ। कुछ लोगों ने पत्रिका के बाहरी लेहिंदी भाषा से ,उद्योग ,आउट सज्जा और मुख पृष्ठ की सराहना की तो कई प्रवासियों ने भौगोलिक दृष्टि- संबंधित लेखों की मौलिकता को ज्ञानवर्द्धक बताया है।

सुरेशचंद्र शुक्ल ने प्रवासी रचनाओं को सराहा और कहा कि गर्भनाल पत्रिका के माध्यम से भारतीय प्रवासियों को जोड़ने का प्रयास मुझे बहुत आनंदित करता है। पत्रिका से जुड़ने के कारण मैं भारतीय गतिविधियों से अवगत होते रहता हूँ। पत्रिका में सदस्य के रूप में जुड़ने से वे गौरवान्वित महसूस करते हैं। श्यामत्रिपाठी, कनाडा ने पत्रिका को सुंदर नए विचारों से भरपूर, संसार की कल्पनाओं का निचोड़ बताया है। वे कहते हैं कि पत्रिका की भाषा बहुत ही समृद्ध है। इसके माध्यम से हम विदेशों में रहकर भी हिंदी भाषा से जुड़े रहते हैं। सही मायने में आज गर्भनाल जैसी पत्रिका की आवश्यकता है। भविष्य में गर्भनाल पत्रिका भारतीय प्रवासियों की आवाज बनेगी।

पत्रिका में प्रकाशित सभी लेखों को विदेशों में रह रहे भारतीय प्रवासियों ने बेहतर बताया। यह पत्रिका भविष्य में भारतीय संस्कृति को विदेशों में सवारने और संजोने कार्य भी करेगी।

अत:मैं यह कह सकता हूँ कि गर्भनाल पत्रिका जोकि भारतीय प्रवासियों के लिए प्रकाशित की जाती है वो उनके लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यह पत्रिका भारतीय प्रवासियों को उनको भारत भूमि से दूर रहते हुए भी उन्हें यहाँ की संस्कृति, समाज, साहित्य और राजनैतिक गतिविधियों आदि सब से अवगत कराती हैं और उन सब प्रवासियों को भारत से जोड़े रखती

Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

है। गर्भनाल पत्रिका भारतीय प्रवासियों के अंदर कहीं ना कहीं उनके भारतीय होने के एहसास को भी बनाए रखती है।गर्भनाल ई-पत्रिका के तथ्यों का अंतर्वस्तु विश्लेषण करने के बाद निम्नलिखित बातें निकल कर आ रही है:-

- इस पत्रिका में देशज तथ्यों की अधिकता है, और इसमें भारत और भारत से जुडी संस्कृतियों का उल्लेख ज्यादा किया जा रहा है।
- देश के संबंधित तथ्यों को बड़े रोचक ढंग से पेश किया जा रहा है. जिससे प्रवासी भारतीयों को अपनी माटी से जुड़ने में ज्यादा आनंद की अनुभूति हो रही है।
- इस पत्रिका का पेज व्यू देखने पर पता चल रहा है कि इसका विस्तार लगभग पश्चिम के सभी देशों में हो गया है. खासकर यूरोप के देशों में इस पत्रिका को ज्यादा देखा और पढ़ा गया है। यह पत्रिका एशिया के देशों में तो पढ़ी और देखी ही जा रही है लेकिन यूरोपीयन देशों में विस्तार को इस पत्रिका के लिए सबसे बड़ी उपलब्धि के रूप में कहा जा सकता है।
- इस पत्रिका के प्रकाशित लगभग सभी लेख हिंदी साहित्य से प्रभावित होते प्रतीत हो रहे हैं, जिसमें उत्तर भारतीय साहित्य की प्रमुखता है।
- गर्भनाल ई-पत्रिका ने प्रवासी भारतीयों को एक मंच प्रदान किया है जहाँ वो अपनी अभिव्यक्ति को जनमानस तक पंहुचा रहे हैं जिसमें वे अपनी उपलब्धियों से लेकर विदेश में रह रहे अपने देशवासियों के लिए संदेश देने का भी कार्य कर रहे हैं।

संदर्भ-ग्रंथ सूची

1. करीम, एच. करीम. (2003). द *मीडिया आफ डायस्पोरा*. कनाडा: साइकोलॉजी प्रेस।
2. लाल, बी. वी., रीव्स, पी., & राय, आर. (2007). द *इन्साक्लोपीडिया ऑफ इंडियन डायस्पोरा*. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
3. दुबे, अ. कुमार. (2014). *समाज विज्ञान विश्वकोश खंड*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
4. यादव, अ. कुमार. (2013). *भारत में जनसंचार एवं पत्रकारिता*. पंचकुला: हरियाणा ग्रंथ अकादमी।
5. चौधुरी, बि. लोह. (2003). *नव मध्यमेर रूपरेखा*. पश्चिम बंगाल: पश्चिम बंगाल सरकार पुस्तक परिषद।
6. गुप्ता, वि. (2015). *संचार और मीडिया शोध*. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
7. राजगढ़िया, वि. (2011). *जनसंचार सिद्धांत और अनुप्रयोग*. नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन।

8. त्रिपाठी, ल. (2012). *मनोवैज्ञानिक अनुसंधान पद्धतियाँ*. आगरा: राखी प्रकाशन।
9. दयाल, म. (2010). *मीडिया शोध*. पंचकुला: हरियाणा साहित्य अकादमी।
10. तिवारी, अ. (1997). *हिंदी पत्रकारिता का वृहद इतिहास*. दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
11. पाल, ह., & पाल, र. (2015). *विषयवस्तु विश्लेषण*. दिल्ली: हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय।
12. गुप्ता, आर. के. (2008). *समाचार पत्र संपादन एवं पृष्ठ सज्जा*. दिल्ली: ओमेगा पब्लिकेशन।
13. जोशी, र. (2008). *मीडिया विमर्श*. नई दिल्ली: सामयिक प्रकाशन।
14. गुप्ता, आर. के. (2008). *हिंदी पत्रकारिता इतिहास एवं विकास*. दिल्ली: ओमेगा पब्लिकेशन।
15. राजाराम, क. (2012). *भारतीय संस्कृति*. नई दिल्ली: स्पेक्ट्रम बुक्स प्रा. लि।
16. आहूजा, र. (2004). *सामाजिक अनुसंधान*. नई दिल्ली: रावत प्रकाशन।
17. शर्मा, शु. (2016–2017). *गर्भनाल ई-पत्रिका*. भोपाल: http://www.garbhanal.com
18. Bhatia, T. K. (2001). *Media, identity and diaspora: Indians abroad*.
19. Karim, H. K. (1998). *From ethnic media to global media: Transnational communication network among diasporic communities*.
20. Noronha, S., & Papoutsaki, E. (2014). *The migrant and the media: Roles, challenges, and potential of ethnic media*.
21. Gautam, M. K. (2013). *Indian diasporic identity*. Carim-Indian Research Report.
22. Houssein, C. (2010). *Diaspora memory and ethnic media: Media use by Somalis living in Canada* (Vol. 12).
23. Chattyapadhya, P. (2006). *फ्रीलैंस सांगबादिकता व लेखालेखी*. कोलकाता: Dej Publication।
24. Krippendorff, K. (2004). *Content analysis: An introduction to its methodology*. New Delhi: Sage Publication.
25. Wimmer, R. D., & Dominick, J. R. (2011). *Mass media research*. New Delhi: Cengage Learning.

***

The Asian Thinker